International Journal of Applied Research 2015; 1(11): 751-752

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(10): 751-752
www.allresearchjournal.com
Received: 15-08-2015
Accepted: 17-09-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

अष्टछाप कवि और भक्त कवि नन्ददास

डॉ. शिवदत्त शर्मा

हिन्दी साहित्य का मध्य काल भक्ति काल एवं स्वर्ण काल के रूप में प्रख्यात है। अन्य विशेषताओं के अतिरिक्त यह काल इस लिए भी अलौकिक है कयों कि इस काल में भक्ति की रस लहरी ने सभी को प्रभावित किया तथा जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य की ओर मानव मात्र को मोडने का स्तुत्य प्रयास किया।निराकार एवं साकार भक्ति अपनी अपनी जगह श्रेष्ठ है। सगुण भक्ति के पुरोधा तुलसी और सूरदास विख्यात हैं।राम भक्ति एवं कृष्ण भक्ति को इन्होंने जिस शिखर पर स्थापित कर दिया वह बेजोड हैं। कृष्ण भक्ति शाखा में सुरदास एवं अन्य कृष्ण भक्त कवियों ने अपनी अमूल्य कृतियों से न केवल आध्यात्मिक क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया अपितु साहित्यिक दृष्टि से भी महत्व पूर्ण रचनाओं से साहित्य को स्मृद्ध किया। सूरदास जैसे महान कवि ने कृष्ण की अद्भुत छवि का अन्धत्व के बावजूद जो चित्रण किया है उसकी मिसाल साहित्य में मिलना कठिन है। उनका साहित्य अलौकिक एवं अपूर्व है। उनके इलावा अनेक कवि और भी हैं जिन्होंने कृष्ण भक्ति के प्रचार और प्रसार में अपना बहुमूल्य योग दान दिया जिसके लिए सम्पूर्ण साहित्य उनका ऋणी रहेगा।

भक्त सूरदास के गुरु श्री वल्लभाचार्य ने पुष्टि मार्ग के प्रचार के लिए अत्यधिक प्रयास किए। उनके नाम से वल्लभ सम्प्रदाय जाना जाता है। यह सम्प्रदाय शुद्ध द्वैत दर्शन पर आधारित है तथा इसके व्यावहारिक पक्ष को पुष्टि मार्ग कहा जाता है। भक्ति–क्षेत्र में पुष्टि मार्ग ने कोई नवीन प्रयोग नहीं किया ,परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से पुष्टि मार्ग का विशेष महत्व है।भगवानके अनुग्रह या कृपा को ही पोषण या पुष्टि कहा जाता है।

कृष्ण–काव्य धारा में पुष्टि मार्ग का विशेष महत्व है। अष्टछाप के आठों कवियों ने पुष्टि मार्ग काप्रचार प्रसार एवं अनुसरण किया ।स्वामी वल्लभाचार्य ने गोवर्धन पर्वत पर श्री नाथ जी के मन्दिर की स्थापना की थी। इस मन्दिर में विधिवद् पूजा अर्चना के लिए पुष्टि मार्ग में दीक्षित कुछ शिष्य रहते थे जिनमें सूरदास प्रमुख थे। सूरदास के साथ ही कुछ अतिरिक्त शिष्य वहां रहते थे तथा सूरदास के समान काव्य रचना एवं मधुर कंण्ठ से कृष्ण सम्बन्धित पदों का गुणगान करते थे। इनमें सूरदास सहित जो अन्य शिष्य रहते थे उन में निम्न लिखित अधिक प्रसिद्ध थे–

1 सूरदास 2 कुम्भनदास 3 परमानन्द दास 4 कृष्णदास

स्वामी वल्लभाचार्य के निधन के बाद उनके बडे पुत्र गोपीनाथ आचार्य बने। सम्बत् 1599 में उनका निधन हो गया उसके बाद उनके पुत्र पुरुषोत्तम के निध्न के बाद गोसाईंविट्ठल नाथ ने आचार्य पद सम्भाला। उन्होंन अपने पिता के चार उपरोक्त शिष्यों के अतिरिक्त अपने चार शिष्यों– गोविन्द स्नामी ,नन्ददास ,चतुर्भुज दास तथा छीतस्वामी को मिला कर अष्टछाप की स्थापना की। इन्हें कृष्ण के अष्टछाप अर्थात् अष्ट सखा भी कहते हैं।

अष्टछाप के कवियों में सूरदास के अतिरिक्त जिन कवियों का विशेष स्थान है उनमें सूरदास के बाद नन्ददास का नाम साहित्यिक दृष्टि से विशेषतः उल्लेखनीय है। इसके बाद कुम्भन दास एवं गोविन्दस्वामी भी अष्टछाप के प्रतिष्ठित कवियों में आते है।

भक्त कवि नन्ददास

सूरदास के बाद जिस कवि को अष्टछाप कवियों में सर्वाधिक महत्व प्राप्त है उनमें नन्ददास का नाम सबसे आगे आता है क्योंकि सरसता एवं कविकला से परिपूर्ण नन्ददास सूरदास के समकक्ष दिखाई देते हैं। नन्ददास जाति के सनाढ्य ब्राह्मण थे। इनका जन्म सोरों, जिला एटा, रामपुर गाांव में हुआ था। यह प्रसिद्ध है कि नन्ददास तुलसी दास के चचेरे भाई थे। इनका जन्म सन् 1533 ई में हुआ। सम्वत् 1607 में नन्ददास पुष्टि मार्ग में दीक्षित हुए थे। सूरदास के कहने पर इन्होंने गृहस्थाश्रम स्वीकार किया था। विट्ठलदास के शिष्य बनने के बाद शीघ्र ही इन्हें अष्टछाप कवियों में सम्मिलित कर लिया गया।

कवित्व की दृष्टि से अष्ट छाप के कवियों में सूरदास के ही समान इनको सम्मान प्राप्त था। उन्होंने

लगभग 15 ग्रन्थों की रचना की उनमें से प्रमुख रचनाओं कां संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

1 रास पंचाध्यायी 2 भागवत दशम् स्कन्ध 3 भ्रमर–गीत 4 रूपमंजरी 5 रसमंजरी 6 अनेकार्थ मंजरी 7 नाम मंजरी 8 रुक्मणी मंगल 8 गोवर्धन लीला 9 श्याम सगाई 10 सिद्धान्त पंचाध्यायी ।

नन्ददास की प्रसिद्धि का कारण उनका मुख्य दो रचनाएं हैं। रास पंचाध्यायी और भ्रमर गीत । रासपंचाध्यायी के पांच अध्याय हैं जिनमें श्री कृष्ण की रासलीला ,नखशिख सौंदर्य चित्रण ,गोपी–विलाप ,उपालम्भ और प्रकृति के सौंदर्यका बडा ही सुन्दर चित्रण किया गया है। भ्रतर गीत की रचना उन्हें सूरदास से ही प्राप्त हुई। ज्ञान पर प्रेम की विजय का सुन्दर वर्णन इनके भ्रमर गीत में मिलता है। सूरदास की अपेक्षा नन्ददास की गोपियों में भावुकता कम और तार्किकता अधिक है। उनके अन्य काव्य ग्रन्थ कृष्ण काव्य से सम्बन्धित नहीं हैं। रू॰ मंजरी में अकबर की दासी का वर्णन है तथा रसमंजरी नायिकाभेद ग्रन्थ है। रासपंचाध्यायी का उत्स भागवत्पुराण है। कृष्ण की रास लीला का वर्णन इस काव्य में कोमल एवं सानुप्रासिक पदावली में किया गया हे। भ्रमर गीत में उन्होंने रोला छन्द का प्रयोग किया है। सिद्धान्त पंचाध्यायी उनका भक्ति सिद्धान्त विषयक ग्रन्थ है। उनके काव्य का एक उदाहरण देखिए–

दौरि दौरि आवत मोहि मनावति, दाम खरच मधु मोल लई री।
अंचरा पसारति मोहि खिजावति, तेरे बबा की कहा चेरी भई री ।
जा री जा दूती तू भवन आपने, लख बातन की एक कही री।
नन्ददास प्रभु वे क्यों नहीं आवत, उनके पायन कहां मेंहदी दई री।

यह सत्य है कि बाल लीला वर्णन में सूरदास का कोई मुकाबला नहीं कर सकता परन्तु शब्द चयन की दृष्टि से नन्द दास सूरदास न्यून दिखाई नहीं देते।इस दृष्टि से नन्ददास बडे महत्वपूर्ण कवि हैं। इन्होंने एक एक शब्द या पद को कांट या छांट कर तथा उसे नगीना बनाकर काव्य में प्रयुक्त किया है।

नन्द दास का कलापक्ष भावपक्ष की अपेक्षा अधिक प्रौढ, पुष्ट, एवं स्मृद्ध हैं। इन्होंने अपने काव्य में शब्दों का सार्थक एवं समुचित चयन किया है और इसी लिए उन्हें जडिया उपाधि से विभूषित किया गया । उनकी शब्द योजना के कौशल के कारण यह उक्ति प्रचलित है–

और कवि गढिया, नन्द दास जडिया।

इनके काव्य में कहावतों, मुहावरों, शब्दों आदि का सुन्दर प्रयोग हुआ है। नन्द दास के काव्य के अन्य गुणों में अलंकारों की सहज, स्वाभाविक शोभा तथा रसात्मकता आदि उल्लेखनीय है। इन्होंने गीति शैली के अतिरिक्त प्रबन्ध और मुक्तक शैली का भी प्रयोग किया है।

सूरदास के भ्रमरगीत की तरह ही नन्द दास रचित भ्रमर गीत भी लोकप्रिय है। उपालम्भ काव्य की सुन्दर रचना है। इसमें सूरदास के भ्रमर गीत की अपेक्षा गोपियों की तर्क शक्ति एवं वाक् चातुरी अधिक हैं । गोपियां अपने बौधिक तथा शास्त्रीय तर्कों के सामने उद्धव को हारने पर मजबूर कर देती हैं। निर्गुण का खण्डन तथा सगुण का मण्डन करने में नन्ददास सूरदास से भी कुछ आगे निकल गए है। नन्द दास में स्वाभाविकता कम है,बौद्धिकता तथा कृत्रिमता अधिक है। नन्ददास की भाषा ब्रज है तथा कदाचित् सूरदास की भाषा से अधिक परिष्कृत एवं निखरी हुइ है। व्यंग्य प्रधान होते हुए भी अलंकृत भाषा है।

काव्यगत विशेषताएं

राधाकृष्ण के चित्रण में मौलिकता झलकती है। नन्ददास ने भ्रमरगीत रचना में श्रीमद् भागवद् पुराण को आधार ग्रन्थ के रूप में प्रयोग किया है। परन्तु साथ ही कृष्ण के चित्रण में मौलिकता का परिचय दिया है। रासलीला में कृष्ण को स्वयं रासलीला के लिए इत्सुक दिखाया गया हे।

नन्ददास ने माधुर्य भाव की ही भक्ति को स्वीकार किया है। वैधी भक्ति का विधान भी स्वीकार किया है। माधुर्य या प्रेम भाव की भक्ति के कारण धीरे– धीरे कृष्ण भक्ति धारा में श्रृंगारिकता का विकास होता गया। कृष्ण भक्ति के अनेक सम्प्रदायों मे कान्त भाव की भक्ति पर बल रहा है।

सूरदास की ही तरह रसराज श्रृंगाररस का सुन्दर प्रयोग बहुत ही शिष्ट रू॰ में नन्ददास जी नेभी अपने काव्य में किया है। नन्द दास ने सानुप्रास पदावली का वर्णन अपने काव्य में किया है। सूरदास की ही तरह नन्ददास के काव्य में भी दैन्य भाव नहीं है सम्भवतः इसका मुख्य कारण उनकी भक्ति दास्य भाव की न होना है।

भक्ति कालीन कवियों के काव्य में सामान्य रू॰ से और कृष्ण भक्त कवियों में विशेष रूप स रीतिकालीन साहितय की प्रर्वत्तियों का अंकुर देख जा सकता है। सूरदास जैसा ही विट्ठल नाथ ने भी श्रृंगार रस से पूर्ण एक ग्रन्थ लिखाथा। नन्ददास ने विरह मंजरी में विरह के अनेक काव्य शास्त्रीय भेदों का उल्लेख किया है। इस प्रकार छनद ,अलंकार ,नायिका–भेद नखशिख वर्णन तथा श्रृगाररसपूर्ण रचनाओं का प्रारम्भ कृष्ण काव्य में हुआ। यहीं से रीति कालीन भावों को विकसित होने में सहायता मिली।

अष्टछाप कवियों कालक्ष्य मनोरंजन अर्थात् लोकरंजन रहा है। कृष्ण भक्ति काव्य मर्यादित आचरण अथवा नैतिक उत्थान को सहारा देने वाला काव्य नहीं है। कृष्ण के लोकरंजन कारी रू॰ को ही अधिकाधिक चित्रित किया गया हैलोक मंगलकारी रू॰ का चित्रण कम हुआ है।

निस्संदेह सूरदास के उपरान्त अष्टछाप के कवियों में नन्ददास का नाम प्रमुख है जिन्होंने कृष्णभक्ति काव्य में अपना अमूल्य योगदान दे कर न केवल स्मृद्ध बनाया अपितु पर वर्ती काव्य के लिए सुन्दर आधार शिला रखी। नददास का कला पक्ष भावपक्ष की तुलना में अधिक प्रौढ पुष्ट एवं स्मृद्ध है। इनहोंने गीति शैली के अतिरिक्त प्रबन्ध शैली और मुक्तक शैली का भी प्रयोग किया। कवि रू॰ में नन्ददास का हिन्दी साहित्य के इतिहास में उंचा स्थान हे।

सन्दर्भ सूचि

1 आचार्य परशु राम चतुर्वेदी उत्तरी भारत की सन्त परम्परा पृ 97
2 दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता
3 डॉ बलदेव उपाध्याय भारतीय दर्शन पृ 134
4 श्री वेदव्यास श्री मद् भागवद् पुराण पृ 234
5 नन्ददास भ्रमरगीत पृ 43
6 डॉ नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ 123